गंगा संस्कृति प्रवाह यात्रा

गंगासागर से गंगोत्री

१ फरवरी २००८ से ६ मार्च २००८

गंगा संस्कृति प्रवाह यात्रा क्यों ?

- माँ गंगा को टिहरी बाँध सहित अन्य बंधनों से मुक्त कराने के लिए।
- माँ गंगा की अविरल और निर्मल धारा पाने के लिए।
- गंगातटीय नगरों की विशिष्ट संस्कृतियों की रक्षा के लिए।
- गंगा पर आश्रित लोगों की जीविका रक्षा के लिए।
- संपूर्ण देश को अवश्यंभावी विभीषिका (बाँध टूटने पर होने वाली जलप्रलय) से बचाने के लिए।

कार्यक्रम और रात्रि विश्राम स्थल :-

१ गंगासागर (यात्रा प्रारम्भ)	: ०१ फरवरी २००८;
२ कोलकाता (उद्घाटन)	: ०२ फरवरी २००८;
३ मायापुर	: ०३ फरवरी २००८;
४ बेरहमपुर	: ०४ फरवरी २००८;
५ मालदा	: ०५ फरवरी २००८;
६ राजमहल	: ०६ फरवरी २००८
७ साहेबगंज	: ०७ फरवरी २००८;
८ कहलगाँव	: ०८ फरवरी २००८;
९ भागलपुर (अवकाश)	: ०९ फरवरी २००८;
१० सुल्तानगंज	: ११ फरवरी २००८;
११ मुंगेर	: १२ फरवरी २००८;
१२ सिमरिया घाट (बेगूसराय)	: १३ फरवरी २००८;
१३ पटना	: १४ फरवरी २००८;
१४ बक्सर	: १५ फरवरी २००८;
१५ गाजीपुर	: १६ फरवरी २००८;

१६ वाराणसी (अवकाश)	: १७ फरवरी २००८;
१७ विंध्याचल/मीरजापुर	: १६ फरवरी २००८;
१८ इलाहाबाद	: २० फरवरी २००८;
१६ फतेहपुर	: २१ फरवरी २००८;
२० कानपुर	: २२ फरवरी २००८;
२१ बिठूर	: २३ फरवरी २००८;
२२ फर्रूखाबाद	: २४ फरवरी २००८;
२३ बरेली (अवकाश)	: २५ फरवरी २००८;
२४ कछलाँ(सूकर क्षेत्र)	: २७ फरवरी २००८;
२५ नरौरा	: २८ फरवरी २००८;
२६ गढ़मुक्तेशवर	: २६ फरवरी २००८;
२७ मुजफ्फरनगर	: ०१ मार्च २००८;
२८ हरिद्वार	: ०२ मार्च २००८;
२६ ऋशिकेश	: ०३ मार्च २००८;
३० देवप्रयाग	: ०४ मार्च २००८;
३१ टिहरी	: ०५ मार्च २००८;
३२ उत्तरकाशी (स्थगन)	: ०६ मार्च २००८;
३३ गंगोत्री (समापन)	: अक्षय तृतीया